International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science

ISSN: 2455-7943

ch lyno jklk e: of.kr fookg l Ldkj ,o lkUn;Z o.kZu

MkW 'kkguokt tgku

प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, मुमताज पी0जी0 कालेज, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

बीसलदेव रासो गेय श्रृंगारिक परम्परा का प्रतिनिधि काव्य है। काव्यत्व की दृष्टि से यह ग्रन्थ आदिकाल की श्रेष्ठतम कृति है। भारतीय साहित्य में ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम पर चरित्र काव्य लिखने की परम्परा अति प्राचीन है। बीसलदेव रासो में राजा बीसलदेव के नाम पर काव्य रचना की गयी है परन्तु काव्य का केन्द्रीय बिन्दु राजमती है। काव्य नायक प्रधान न होकर नायिका प्रधान है, नायिका के व्यक्तित्व को भली–भाँति उभारा गया है।

हिन्दू धर्म में किसी भी कार्य को करने से पूर्व अभीष्ट देवी देवता की वन्दना करना शुभ मानते हैं और अपनी कार्य पूर्ति के लिए भगवान का आशीर्वाद चाहते हैं। इसी परम्परा का निर्वाह करने हेतु कवि ने अपनी काव्य रचना प्रारम्भ करने से पूर्व गणेश जी और सरस्वती जी की वन्दना की है–

गउरिका नन्दन त्रिभुवन सार।

नाद भेदउ थारउ उदर भण्डार।

एक दन्त मुख्स झलहलइ।

मूंसाकउ बाहण तिलक सिन्दूर।

कर जोड़ि नरपति भणइ।

जाणि करि रोहिणी तप्पई सूर।।[1]

है गौरी नन्दन त्रिभुवन सार। नाद भेद तुम्हारे उदर भण्डार में रहता है तुम्हारे मुख से एक दाँत झलकता है। तुम्हारा वाहन मूषक (चूहे) का है और तिलक सिन्दूर का है। हाथ जोड़कर नरपति कवि कहता है कि आप ऐसे लग रहे हैं जैसे रोहिणी नक्षण में सूर्य तप रहा हो।

वह दूसरे पद में भी लम्बोदर अर्थात् गणेश जी को बुद्धि और सिद्धि के भण्डार बताते हैं–

सरइ कडबइ गणपति गाई।

International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science ISSN : 2455 7943 IJMRSS ॥ विद्वान्सर्वत्र पूज्यते ॥

नवणु करी नइ लागुं जी पाय।

तोहि लम्बोदर बीनवउं।

सिद्धि नई बुद्धि तणउरे भण्डार।

चउथि जी अक्षर आणिज्यो ठांइ।[2]

दूसरे छन्द में, हे गणपति। तुम्हारा गुणगान कर और नमस्कार कर मैं तुम्हारे पाँय लगता हूँ। तुमसे, हे लम्बोदर ! मैं विनय करता हूँ सिद्धि और बुद्धि के तुम भण्डार हो चतुर्थी को मैं तुम्हारा पारण करता हूँ। तुम मेरा भूला हुआ अक्षर स्थान पर ला देना।

गणेश वन्दना के पश्चात् कवि देवी सरस्वती की वन्दना करता है–

हंस बाहणि देवी करि धरइ बीण।

झूठड़उ कवित कहइ कुलहीण।

बर देज्यो माता सारदा।

मूलउ जी अक्षर आणि बहोड़ि।

तइं तूठी अक्षर जुड़इ।

नाल्ह वषाणइ बेकर जोड़ि।[3]

हे हंसवाहिनी देवी ! तू करों में वीणा धारण करती है। झूठा कवित्त कुलहीन (कवि) ही कहता है। हे शारदा माता ! तू मुझे वर दे। मेरे भूले भटके अक्षरों को तू लौटा ला। तेरे प्रसन्न होने पर अक्षर मिल जाते हैं।

नाल्ह रसायूण रस भरिगाइ।

तूठी छइ सारदा त्रिभुवन माइ।।[4]

अर्थात् देवी सरस्वती प्रसन्न है और मैं रसमयी वार्ता का गान कर रहा हूँ।

धार नरेश भोज अपने आसन पर विराजमान हैं। उनकी एक अत्यन्त रूपवती तथा सर्वगुण सम्पन्न पुत्री है जिसे विवाह योग्य जानकर रानी राजा भोज के समक्ष उसके विवाह की चिन्ता बताती हैं। राजा पंडितों को बुलाकर योग्य वर तलाशने को कहते हैं। ब्राह्मण बीसलदेव को राजमती के लिये चुनते हैं। बीसलदेव की प्रशंसा करते हुये कहते हैं–

गढ़ अजमेर बसइ रे भुआल।

चहुआणां कुलि तिलक सिणगार।

कुलीय छत्तीसइ रे उलगइ।

मइमत हस्तीय पडइरे पलाण।

लाषा तुरीय धरि पाषर्या।

बर रे आणउ बीसलदेव चहुआणां।[5]

वह राजा अजमेर गढ़ में निवास करता है। चौहानों के कुल में (उसका) तिलक और श्रृंगार है। छत्तीसों कुलों (के राजपूतों) में वह अलग (स्मरणीय) है। मदमस्त हस्तियों पर उसका पलांद पड़ता है। उसके घर में एक लाख घोड़ों पर पाखर (काठी) पड़ा हुआ है।

हिन्दू विवाह में ब्राह्मण, लगन, सुपारी आदि का विशेष महत्व देता है। बीसलदेव रासों में भी कवि इनका वर्णन करता है–

बभण भाट बोलविया गय।

लगर सोपारीय पठाइ।

गढ़ अजमेर नइ गम करउ।

पाटि बइसारि पषालिज्यो पाय।

बेटी कहिज्यो राजा भोज की।

राजमती वर बीसलदेव राय।[6]

विवाहोत्सव पर हाथी घोड़े सजाये जाते हैं बन्दनवार बांधे जाते थे, पालकी सजायी जाती थी। इस तरह से सुसज्जित होकर बारात आगे बढ़ती थी जिसका पता छन्द से लगता है।

पूजियउ गणपति चालीछइ जान।

लहइ चौरसिया दूणउ जी मान।,

सात सहज नेजा धणी।

पालसी बइठा छइ सातसइ।

पालीय पर दल को नहीं छेह।

कटक चडयउ ध्वजा फरहारी।

जाणि करि बीसल पर तिष्य देव।[7]

बारात के आने पर स्त्रियाँ कुदृष्टि निवारण के लिये लवण उतारती हैं–

लूण उतारह अपछरा।[8]

भारतीय संस्कृति में मुकुट दूल्हा को शोभा को बढ़ाने के लिये प्रयुक्त होता है। बीसलदेव के सिर पर भी मुकुट बांधा जाता है जिसे देखकर दुल्हन प्रसन्न होती है।

बीसलदेव रासो के विवाह में बहुत–सी ऐतिहासिक मूल्य की मांगलिक वस्तुओं का प्रयोग हुआ है। जैसे– पान, सुपारी, हल्दी, चन्दन, कत्था, सिर पर मोर बांधना, हाथ में कंगन बांधा जाना, चन्दन तिलक लगाना आदि इनका प्रयोग आज भी हिन्दू विवाह के समय होता है। विवाह मण्डप विवाह के समय सुन्दरता के साथ सजाये जाते थे। राजमती का विवाह मण्डप चन्दन के काष्ठ का था। वेदी सोने की थी और मोतियों की माला थी–

पाइ कंकण सिरि बांधियउ मउड़।[9]

काथउ सोपारीय नइ पाका जी पान।[10]

चोबा तिलक सिंदूर।[11]

चन्दन काठ कउ मांडहउ।

सोनाकी चउरी नइ मोतियां की माल।[12]

विवाह के समय उत्तर प्रदेश में सात फेरे पड़ने की परम्परा है परन्तु राजस्थान की ओर मात्र तीन फेरे पड़ने की प्रथा रही होगी क्योंकि नाल्ह ने तीन भांवरों का वर्णन किया है। आजकल राजस्थान की ओर चार भांवरे पड़ने का अधिक प्रचलन है। डॉ0 राजनाथ शर्मा ने बीसलदेव रासो में चार फेरे पड़ने का उल्लेख किया है और माता प्रसाद गुप्त ने तीन भांवरे पड़ने का वर्णन किया है।

पइलइ फेरइ राय दैड़ाइचौ।

आलीसार सों देह कुडाल।[13]

पहिलइ फेरइ दीजइ दाइजउ।

आलीसार सउ उपरि माल।[14]

दूसरे फेरे में राजमती की माता ने बीसलदेव को दहेज दिया। उन्होंने अर्थ और द्रव्य भण्डार दिया और सपादलक्षदेश, साभर, सर के साथ नागर चाल, बिछाल के साथ तोड़ा तथा टकउ और बूँदी और कुडाल देश दिया।

दूजइ फेरइ फेरियउ राउ।

भानुमती राणी कुमारि की माइ।

जमाईनू दीजइछइ दाइजउ।

दीन्हाछइ अस्थ नइ दरब भंडार।

दीन्हउ छइ देस सवालषइ।

सर सइंभरी सउं यनागर चाल।

तोड़ा टउंक बिछाल सउं।

बूंदीय सर सउं देस कुंडाल।[15]

विवाह के समय दहेज देने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। राजमती से विवाह में भी दामाद को अपार धन सम्पत्ति और राज्य सास और ससुर की तरफ से प्राप्त होते हैं। इन सब वस्तुओं के साथ ही साथ वर को जनेउ तथा नवीन वस्त्र पलंग इत्यादि चीज़ें दी जाती हैं। बीसलदेव को ये सारी चीज़ें ससुर की तरफ से मिलती हैं।

हाथि तंबालूय अंजलि नीर।

गलइ जनाइय पहिरण चीर।

कुलीय छत्तीसइ देवतां।

पट पलिंग नइ सावटू सउड।

राजा दी यह छइ दाइजउ।

बारां गढसउ दुरुग चित्तौड़।[16]

वर के साथ वधू भी सजायी जाती है। राजमती ने विवाह के समय रेशम की चुनरी पहन रखी थी, कानों में कुण्डल सुशोभित हो रहे थे।सिर पर राखड़ी और ललाट पर तिलक लगा हुआ था। उसके रूप सौन्दर्य को देखकर बीसलदेव अत्यन्त प्रसन्न हो रहा था क्योंकि त्रिभुवन को विमोहित करने वाला सौन्दर्य राजमती के पास था।

पाटि बहठीछइ राजकुमारि।

कउिहि पटोलीय चूनरी सार।

कानइ कुंडल झिगमिगइ।

सीससउं राषडी तिलक निलाड़ि।

रूप देषि राजा हंस्यउ।

त्रिभुवन मोहियउ जाति पमामरि।[17]

इस प्रकार हम देखते हैं कि बीसलदेव रासो में विवाह वर्णन विस्तार पूर्वक दिया गया है तथा सभी प्रकार के रीति–रिवाज तथा परम्पराओं का निर्वाह किया गया है। नरपति नाल्ह ने विवाह वर्णन बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। राजमती के विवाह में सभी प्रकार के कार्यकलापों का उल्लेख हमें मिलता है। विवाहोपरान्त कन्या की बिदायी होती है। उसे लेकर दूल्हा अपने घर उत्साहपूर्वक जाता है। बीसलदेव भी अपने सास ससुर और अन्य लोगों का आशीर्वाद लेकर अपने घर लौट आता है।

I kUn ;l o.ku&

नाल्ह ने बीसलदेव रासो में राजमती का सौन्दर्य वर्णन बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है। जब राजमती दुल्हन बनती है तो वह चुनरी ओढ़े रहती है। उसके कानों में कुण्डल जगमगा रहे हैं सिर पर शीश फूल है और ललाट पर तिलक है–

पाटि बेइडी छइ राज कुमारि।

कड़िहि पटोलीय चूनरी सा।

कान्ह कुंडल झिगभिगइ।

सीससउं शषडी तिलक निलाडि।[18]

ISSN: 2455-7943

नाल्ह ने राजमती का नखशिख वर्णन परम्परागत ढंग से किया है। कवि दाँतों की तुलना अनार के दानों से, स्वर के लिए वीणा तथा कोकिल से, गति के लिए गयन्द की गति, अधर के लिए प्रवाल, कटि के लिए सिंह आदि। ये सारी उपमायें हमें बीसलदेव रासो में दिखायी देती हैं–

दन्त दाड़िम कुली जी सी।

मुखी अमृत जांणी बाजै कै वीण।

ससि बदनी जी ज्यों मा गयन्द।

अखड़ियाँ...................... रत्नालियाँ।

मौहरा जांणे भ्रमर भमाय।[19]

रूप निष्पम भेदिनी।

पहिरणई लोवड़ी क्षीणइ रे लंकि।

आछी गोरी धण पातली।

अहर प्रबालीय नइ दाड़िम दैव।[20]

कोमल पदम छइ धण केरइ हाय।

मूँगफली जिसी, आंगुली।

उणरा कठन पयउहर काजली रहे।

बोल छइ आकुली।

दंत दाड़िम धण चीता कय लंकि।[21]

उसके अधर प्रवाल के समान लाल–लाल दिखायी देते हैं–

''अहर प्रवालीय''

राजमती का यही तो रति–सौन्दर्य था–

''राज कुँवरि अनइ रूप असेसि।

रूप निरूपम मेदिनी।''

इस रूप को देखकर मुनिजन भी थोड़ी देर के लिये विचलित हो जाते थे–

''जा दीहां मुनिवर चलइ।''

राजमती के रूप को देखकर बीसलदेव मन में हर्ष का अनुभव करने लगता है–

''मन मोह हरषि बीसल चहु आणा।''

नरपति ने केवल सौन्दर्य वर्णन ही नहीं बल्कि विभिन्न स्थानों पर रहने वाले लोगों की प्रवृत्तियों पर भी प्रकाश डालते हुए लिखा है कि ग्वालियर के रहने वाले तथा जैसलमेर की स्त्रियाँ चतुर होती हैं और दक्षिण के रहने वाले लोग व्यसनी होते हैं–

पूरब देस को पूख्या लोग।

पान फूलां तणउ तुं लहइ भोग।

कण संचइ कु कस भखइ।

अति चतुराई राजा गण ग्वालेर।

गोड़ी जेसलमेर की।

भोगी लोग दक्षण – के देस।[22]

कवि ने अपने देश की स्त्रियों की प्रशंसा की है। उनके अनुसार मारवाड़ देश की स्त्रियाँ बड़ी रूपवती होती हैं, उनकी कटि बहुत क्षीण होती है। दाँत स्वच्छन्द और चमकदार होते हैं–

जनम हुबउ थारउ मारू कह देस।

राज कुंवरि अति रूप असेस।

रूप निरायमी भेदनी।

आधा कपड़ क्षणइ कबूली।

अहरिरध कपड़ क्षीणइ कबूली।[23]

बीसलदेव रासो में श्रृंगार रस की मार्मिक अठखेलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। श्रृंगार रस के दोनों पक्षों (संयोग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार) का मार्मिक चित्रांकन हुआ है। डॉ0 द्विवेदी जी का कथन है, ''यह एक भावुक कवि की सरस कल्पना से प्रसूत ऐसे स्वस्थ प्रणय की कथा है जिसमें जीवन का तरल रस प्रवाहित हो रहा है। राजमती की कनक काया केसर की रोली के तुल्य, कठिन कुच सोने के कटोरों के समान तथा कदली गर्भ के समान कोमल अंगों वाली है।''

कनक काया जिसी कूं कूं रोल।

कठिन पयहिर हेम कचोल।

केलि गरम जिसी कूंचली।[24]

एक अन्य छन्द में राजा बीसलदेव की भावज राजा की सीख देते हुये कर रही है कि इस प्रकार की सौन्दर्य सम्पन्न स्त्री तो राजाओं की नारियों में भी नहीं होती है। ऐसी तो देवताओं में मूर्तियाँ भी नहीं हैं। इसके नेत्र हरिण सदृश तथा मधुर वचनों वाले हैं। यह देव की बनाई हुई तथा विधि की गढ़ी हुई हैं। मैंने तो ऐसी स्त्री सूर्य के नीचे (संसार भर में) नहीं देखी है।

इसीय अस्त्रीय नवि राउ कइ नारि।

इसीय न देवलि पूतली।

करल नयन धण वचन सुमीठ।

दईय निपाई विहि घड़ी।

म्हे तउ इसी तिरी न रवि तलै दीउ।[25]

राजमती के सौन्दर्य का वर्णन करते समय नाल्ह ने उसके अंग प्रत्यंग की प्रशंसा की है। उसकी वाणी को वीणा की आवाज के समान बताया, नेत्र को मृग के समान तथा उसकी गति को हंस के समान की कहा है–

मुख अमृत जाणौ बाजै कैवीण।

हंस गमणि मृगलोचनि नारि।[26]

सम्पूर्ण काव्य के अवगाहन के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नाल्ह के काव्य में सौन्दर्य के लिये जो उपमायें दी हैं। वह अपने में बहुत सुन्दर हैं तथा नायिका के सौन्दर्य को बढ़ाने में सक्षम है। जहाँ–जहाँ सौन्दर्य का चित्रांकन किया गया है वहाँ पर एक सुन्दर नायिका का चित्र नेत्रों के समक्ष उपस्थित हो जाता है।

सम्पूर्ण काव्य के अवगाहन के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नाल्ह के काव्य में सौन्दर्य के लिये जो उपमायें दी हैं। वह अपने में बहुत सुन्दर हैं। ''राजमति का सौन्दर्य उपमानारि संस्कृत परम्परा से आगत अलंकारों का सहारा लेकर सुष्ठु एवं भड़कीला बनाया गया है, जो बड़ा आकर्षक है।''[27] तथा नायिका के सौन्दर्य को बढ़ाने में सक्षम है। जहाँ–जहाँ सौन्दर्य का चित्रांकन किया गया है वहाँ पर एक सुन्दर नायिका का चित्र नेत्रों के समक्ष उपस्थित हो जाता है।

lUnHk

1. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 59
2. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 60
3. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 62–63
4. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 62
5. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 65
6. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 64
7. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 68
8. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 67
9. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 69
10. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 72
11. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 72
12. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 73
13. डॉ0 राजनाथ शर्मा : बीसलदेव रासो, पृष्ठ सं0 31
14. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 73
15. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 74
16. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 75–76
17. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पृष्ठ सं0 76–77
18. माता प्रसाद गुप्त और अगरचन्द नाहटा : बीसलेव रास, पद सं0 23
19. श्री हरिकान्त श्रीवास्तव : भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य, पृष्ठ सं0 287
20. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पद 34

International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science
ISSN : 2455-7943
IJMRSS
॥ विद्वान्सर्वत्र पूज्यते ॥

21. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त : बीसलदेव रास, पद 113

22. श्री हरिकान्त श्रीवास्तव : भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य, पृष्ठ सं0 287

23. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त, बीसलदेव रास, भूमिका, भाग

24. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त, बीसलदेव रास, पद 128

25. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त, बीसलदेव रास, पद 47

26. डॉ0 माता प्रसाद गुप्त, बीसलदेव रास, पद 3

27. सीताराम शास्त्री, बीसलदेव रास : एक गवेषणा, पृ0 सं0 30

International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science :: ISSN : 2455-7943 IJMRSS ॥ विद्वान्सर्वत्र पूज्यते ॥